विद्यार्थी और रिश्ते

विकास चौरसिया

विद्यार्थी और रिश्तें

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-93-6026-997-5

Price: ₹ 200.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

विद्यार्थी और रिश्तें

By

विकास चौरसिया

जय माता सरस्वती

मेरे प्यारे
दोस्तो,

यह मेरी पहली पुस्तक है, और इस पुस्तक के माध्यम से मैं आप सभी लोगो से कई महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर बाते करूगाँ वो बातें जो एक इंसान के हाते हुऐ हमें मालूम होना चाहिये।

मैं चर्चा करना चाहता हूँ उन सब चीजों की जो उन सभी में थी जो आज इतने महान है, हमारे, तुम्हारे, और उन सब के लिये जो अपनी जिन्दगी में कुछ कर गुजरने की ख्वाहिस रखते है।

आज हमारे भारत वर्ष मे ज्यादातर लोग पढ़े–लिखे मिलते है, अर्थात साक्षर है, और जो नही है वो भी आज अपने बेटे–बेटियों या आस–पास के माहौल से ढ़ेरो सीख लेते है। ऐसा नही कि बस वो हमी से सीख लेते है। बल्कि हम भी उनसे तमाम चीजे सीखते है।

दोस्तों पढ़ें लिखे होना बहुत अच्छी बात है, पर उनके साथ–साथ हमे बडो का सम्मान,माता–पिता से प्यार, लोगो से प्यार, या ये कह लिजिये "वसुधैव कुटुम्बकम" को भी समझना चाहिये।

अपने Carreer के प्रति सचेत होकर समय की कीमत को पहचानते हुये आगे की ओर बढ़े, तो जिन्दगी के जीने का मजा ही कुछ और हो जायेगा।

जिन्दगी के सन्दर्भ में मेरी चन्द लाइनें आपके समक्ष–

जिस तरह, बहुत पापड़ बेलने पड़ते है, इस दुनिया मे कुछ पाने के लिये। खून – पसीना बहाना पड़ता है, पैसा को कमाने के लिये, उसी तरह करना पडता है। जवानी सें मेहनत,''अपने बुढ़ापे को सफल बनाने के लिये।''

– विकास

जी हाँ दोस्तों अपने बुढ़ापे को सफल बनाना हैं, तो जवानी से मेहनत और जवानी को सही से चलाना है, तो हमें अपनी "Teen"अर्थात् Thirteen, Fourteen to Nineteen में कड़ी मेहनत की जरूरत होगी।

आइये साथ में मिलकर आगे बढ़तें हैं, और आज से कसम खाते हैं, कि किसी भी काम में वो अपना काम हो, चाहे वो पढ़ना हो, चाहे वो हल जोतना हो, चाहे वो मोबाइल बनाना हो, चाहे वो पान–बेचना हो या फिर चाहे वो चाय बेंचना हो, या फिर हम डॉक्टर, इन्जीनियर या टीचर हैं, हमें अपना काम ईमानदारी से 100% ऊर्जा से परिपूर्ण होकर करना है।

आज हमें नरेन्द्र मोंदी जी से एक प्रेरणा लेनी चाहिये जो सबके लिये महत्वपूर्ण है, विशेषकर जो सफल होना चाहते है कि–

अगर एक चाय बेचने वाले आदमी का बेटा प्रधानमंत्री बन सकता है, तो हममें से शायद ही किसी के पापा चाय बेंचते होंगें। तो आइये शुरू करते हैं – कुछ बिन्दुओं से एक सुन्दर जिन्दगी की कल्पना करना और शुरूआत करना।

आभार

वैसे तो मैंने अपनी जिन्दगी में जिनसे भी कुछ सीखा है उन सबका आभार व्यक्त करना चाहूंगा किन्तु कुछ विशेष जनों का विशेष आभार व्यक्त करना चाहूंगा जिनमें –

C.A.V Inter College - Allahabad] Lingua Franca Institute Allahabad ,oa BRAVGARD Institute, Kanpur के सभी अध्यापकों का तहे दिल से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।

मैं अपने परिवार के कुछ सदस्यों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ– अभिमन्यू, केशनपाल, राजाराम, राधेश्याम, धर्मेन्द्र, राजकरन, /ध्रुवलाल, श्यामबाबू।

मेरें भाई/बहन– राजेश, रवि, राहुल, आकाश, सचिन, शशिकपूर/ रीता, छाया, नैना, मोना, काजल, निधि, प्रतीक्षा। एवं सभी दोस्त एवं सम्मानीय पाठक गण।

लेखक के बारे में

विकास चौरसिया का जन्म भटपुरवा ग्राम में हुआ था। उनका बचपन का नाम मुनिया था जो उनके बड़े भइया ने रखा था छोटे होने की वजह से बडे ही शरारती प्रकृति के थें। इनको गाने गाना, गाने लिखना, तैरना और क्रिकेट खेलना बहुत पसन्द हैं। इनका मानना है कि जीवन में कैसी भी परिसथितियां हों इंसान को हमेशा हंसते रहना चाहिए और इसीलिए ये जहां पर रहते हैं हमेशा कोशिश ये करते है कि लोगों के चेहरे पर हंसी बनी रहें इनका भगवान पर अटूट विश्वास है किन्तु इनका मानना है कि अपने घर के भगवान (माता–पिता) को खुश करने के बाद ही हम किसी भगवान की पूजा करें। तो जीवन में सब कुछ ठीक होगा।

पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक, मेरें परम पूज्यनीय पिता जी – श्री लक्ष्मी नारायण चौरसिया जी एवं माता जी – श्रीमती शिव कुमारी चौरसिया जी को एवं मेरे गुरू जी – डां० राकेश चौरसिया जी को सादर समर्पित हैं।

यह पुस्तक गद्य एवं पद्य का बहुत अच्छा मिश्रण है। इस पुस्तक में विद्यार्थी जीवन से जुड़ें काफी महत्वपूर्ण तथ्य हैं जो शायद सबमें समान होते हैं मेरी यह पुस्तक सभी रिश्तों पर आधारित है वो रिश्ता चाहे मां–बेटे का हों, दोस्त का हो, भाई–बहन का हो या प्रेमी–प्रेमिका का हों इस पुस्तक के माध्यम से इन सभी रिश्तों के महत्व पर प्रकाश डाला गया हैं। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने सच्चे प्यार के बारें में विस्तृत जानकारी दी हैं। जो पूरी तरह से कविताओ से सुसज्जित है।

मुझे आशा ही नही बलकि विश्वास है इस पुस्तक कों आप सभी लोगों का बहुत प्यार मिलेगा।

माता-पिता (The Parents)

''खुद फटे कपड़े पहनकर, जीन्स दिलाया हमको, संसार के लोगों, और उनकी सभ्यता से परिचय करवाया हमको, ऐ मेरे दोस्तों, तुम खूब प्यार करो अपने उन पिता और माता से, जिन्होंने भगवान से गिड़–गिड़ाकर, इस धरती पर बुलाया हमको।''

मेरे प्यारे दोस्तों अब चूँकि हमारी जिन्दगी की शुरूआत ही माता–पिता से होती है, इसलिये कुछ बाते माता–पिता के बारें में जानना बहुत जरूरी है।

क्योंकि हमने आज तक कई गलतियाँ की होंगी और अब सचेत होने जा रहे हैं, और उन गलतियों की माफी मांगें तो माँगें किससे ? तो उत्तर होगा –

माँ, जी हाँ दोस्तो –

एक बार मैंने एक छोटा सा सवाल पूँछा कि दुनिया कि वो कौन सी अदालत है, जहॉ बड़े से बड़ा गुनाह निःसंकोच बिना दण्ड दिये माफ हो जाता है। बहुत लोग खड़े थे। सभी सोंच में पड़ गये कि वो अदालत है कहाँ, पर वहीं खड़ी एक बच्ची बोली मैं बताऊँ–मैंने कहा हाँ बताओं बेटा – उसने अपनी मुस्कान की छटा बिखेरते हुये कहा मेरी मम्मी की अदालत में, किसी भी गुनाह कि सजा नहीं मिलती है। मेरी आँखे भर गई। हाँ दोस्तों मातायें होती ही ऐसी हैं, हम चाहे जो कह दें, उनसे

वो फिर भी हमको वैसा ही प्यार करती हैं। आखिर बचपन से पालती जो हैं।

किसी विचारक ने कहा है – ''कि जो माँ–बाप बचपन से लेकर जब तक हम कमाने नहीं लगते तब तक हमारा पालन–पोषण करते हैं। तो उनको उनके बुढ़ापें में रोज सुबह मंदिर ले जाना और उनको हर तरह का सुख देना हमारा थोड़ा सा फर्ज है, जो थोड़े से कर्ज को कम कर सकता है, जो उन्होंने हम पर किये है।''

और फिर जो माँ–बाप हमें 12–15 साल तक अंगुली पकड़ाकर हमें हमारे स्कूल लेकर जाते हैं; उनको बुढ़ापे के 12–15 साल हम मंदिर क्यों नहीं ले जा सकते हैं।

वो हमें स्कूल लेकर जाते हैं, उससे उनको कुछ नहीं मिलता पर, हमें चार चींजे उनको मन्दिर ले जाने से ऐसे ही मिल जाती हैं।

''आयु, विद्या, यश और बल'' के साथ–साथ उनका ढेर सारा प्यार जो हीरे से अनमोल है मिलता है। आजकल के लोग माँ–बाप को अक्सर गुस्सा कर देते है, और जो सबसे महत्वपूर्ण तथ्य –

''वो माँ जो जब हम नहीं बोल पाते थे तब हमारी सारी बातें समझ जाती थी, और आज हम जब बड़े हो गये है, और बोल लेते हैं, तब उसी माँ से ये कहते फिरते हैं, कि अरे माँ तुम नहीं समझोगी।

अरे कैसे नहीं हम उनके बेटे हैं बेटियां हैं – हम गूँगें होते तो भी वो समझतीं। जरा सोचिये उस माँ पर क्या बीतती होगी, जिसने बचपन से हमें पाला–पोशा और सब–कुछ सिखाया उसी से कहते है, माँ तुम नहीं समझोगी। मेरी ममी

तो मुझसे तुरंत कहती हैं – कि ''हमरेन पेट की लोखरी (लोमड़ी) हम हिन से अउकी बउकी (इधर–उधर)।

मैंने कहीं पढ़ा–लिखा था –

''कि गर्मी में जब पसीना अपनी गर्लफ्रेन्ड के दुपट्टे से पोंछा तो उसने कहा मेरा दुपट्टा गन्दा ना करों, और जब वही पसीना माँ के आँचल से पोंछा तो माँ ने कहा इधर का गन्दा है, ये ले इधर साफ है, यहाँ से पोंछ।''

ऐसा नहीं कि पिता जी प्यार नहीं करते हैं, वो भी हम लोगों को बहुत प्यार करते हैं, पर उनको थोड़ा कड़क हो के रहना पड़ता हैं, जिससे माँ का प्यार और पिता का डर बरकरार रहे। पिता भी अगर हमें दिखायेंगे कि वो भी हमसे बहुत प्यार करते हैं, तो हम बिगड़ सकते हैं और कोई मम्मी–पापा यह नहीं चाहेंगें। सभी के मम्मी–पापा यही चाहते है, कि उनका बेटा आगे चलकर अच्छा आदमी बने हमारा नाम रोशन करे।

एक बार एक बच्ची अपने पापा के साथ कहीं जा रही थी और अचानक एक पुल आया तो बच्ची के पापा ने कहा बेटा आप मेरा हाथ अच्छे से पकड़ लो कस के। तो वो लाडली बच्ची कहती है, पापा–पापा आप मेरा हाथ पकड़ लो क्योंकि मैं तो आपका हाथ भूलकर छोड़ भी सकती हूँ, पर आप मेरा हाथ कभी नहीं छोड़ेगें। मुझे यकीन है, उससे मैं सुरक्षित रहूँगी।

सच है, कितना अजीब लगता है, दोस्तो वो छोटी बच्ची तो भूलकर छोड़ने की बात कर रही थी पर हमारे इस समाज में बहुत ऐसे भी लोग है, जो माँ–बाप बच्चों का साथ मरते दम तक नहीं छोड़ते हैं, हमेशा आर्शीवाद ही देते रहते हैं।

जब कभी हमें दर्द होता है या कोई छोटा–मोटा दुःख होता है, तब हम मम्मी को याद करते हैं, पर जब कभी बहुत बड़ी मुसीबत आती है तो हमें अपने पापा की याद आती है। जैसे :– जब हमें कोई असहनीय दर्द होता है तो हम ''आय मम्मी रे'' कह के रोते है, पर अगर हमारे जाते हुये अगर कोई ट्रक हमारे पास अचानक आ जाता है तो मुँह से तुरन्त

निकलता है ''अरे बाप रे।'' तब हमें माँ की याद नहीं आती है।

इसीलिये माता–पिता दोनों का हमारे जीवन में अवर्णनीय महत्व है। पिता अगर कहीं से पैसा कमाते हैं, तो घर में खाना बनाना हम लोगों का पालन–पोषण करना, हमारी जरूरतें पूरी करना, हमारे नखरे उठाना केवल एक माँ ही कर सकती है।

याद रखना दोस्तों, जिस दिन तुम्हारे कारण से अगर माँ–बाप की आँखों में आँसू आ गये तो तुम्हारा किया जितना भी धर्म पुण्य का कार्य उनकी आँसू की बूंदो के साथ ही बह जायेगा।

सम्पूर्ण जिन्दगी में माँ–बाप केवल दो बार रोते हैं, एक – जब लड़की घर छोड़े तब और दूसरा – लड़का जब मुँह मोड़े तब।

– अज्ञात

किसी ने क्या खूब कहा है कि अगर आप अपनी जिन्दगी में बहुत सफल आदमी बनना चाहते हैं, तो भगवान से ये न माँग कर कि भगवान हमारी मन्नतें पूरी करें ये माँगे कि भगवान हमारी मम्मी की सारी मन्नते पूरी करें। दोस्त सच में आप बहुत सफल इन्सान बन जाओगे क्योंकि जितना हम अपने बारे में सोचते है उससे कई गुना ज्यादा हमारे माता–पिता हमारे बारे में सोचते हैं।

माता ही दुनिया की वो महिला होती है, जो अपने बेटे के आधार कार्ड या वोटर कार्ड का भी फोटो देखकर यही कहती है कि कितना अच्छा लग रहा है मेरा बेटा किसी की नजर ना लगे।

वो प्यार से हमें पालते हैं और लोरी सुनाते हैं। हो कैसी भी परिस्थितियाँ, हमेशा साथ निभाते हैं। खुदा करे हमारी भी उम्र लग जाये, उन मम्मी और पापा को जिनके सजदे में हमेशा हम अपना सर झुकाते हैं।

– विकास चौरसिया

किसी भी परिवार का परिवश पूरी तरह से माता और पिता पर निर्भर करता है या फिर इनमें से कोई एक ही हो तो भी Family अच्छी है क्योंकि **Family** शब्द में पहले ही Father और Mother आता है –

Family (Father and Mother ideal lord for youth)

Ma-Bap

(महान औरत)

(बहुत प्रसिद्ध आदमी)

दोस्तों, माता और बेटे के सन्दर्भ में एक कहानी बहुत प्रचलित है, जो निम्नवत है :–

एक बार एक बेटा सो रहा था, अचानक उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि वहाँ यमदूत खड़े हैं, उस लड़के ने उनसे पूछा आप यहाँ क्या करने आये हो। तब यमदूत बोला हम तेरी माँ को लेने आये हैं, वह लड़का तुरन्त रोने लगा और उनसे गिड़गिड़ाया कि आप मेरी माँ के जगह मुझे ले चलिये पर मेरी माँ को मत मारिये। तब यमदूत हँसते हुये बोला अरे बेवकूफ हम लेने तो तुझे ही आये थे, पर तुझसे पहले तेरी माँ ने हमसे यही सौदा किया था जो तूने अभी किया है इसलिये अब वही जायेगी।

सच में कितना प्यार करते है माता और पिता। हमें भी उनको खूब प्यार देना चाहिये, वो हमारे वजह से कभी दुखी ना हो हमेशा यही कोशिश करनी चाहिये। क्योंकि अगर किसी ने भी अपने भगवान अर्थात् माता–पिता को दुख दिया तो आज नहीं तो कल वह भी पिता या माता बनेंगे और फिर वैसा ही हमारे साथ भी होगा क्योंकि यह तो न्यूटन का क्रिया–प्रतिक्रिया नियम को मानेगा जिसके अनुसार आप जैसा करोगे वैसा भरोगे होता है।

भाग्य लिखने वाले को, भाग्य विधाता कहते है, देता है जो गरीबों को दान, उसी को दाता कहते है। करती है जो

विद्यार्थी और रिश्ते

लेखक के बारे में

भटपुर्वा, फतेहपुर में जन्में विकास चौरसिया ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने निज निवास फतेहपुर, मटिहा से पुर्ण की है। अपनी आठवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी करने के बाद इलाहाबाद चले गए। और आगे की पढ़ाई C.A.V. Inter College से पूरी की।। वे बचपन से ही कविताएँ लिखने के बेहद शौकीन रहे हैं। उन्होंने अपनी प्रथम कविता तरूण पत्रिका में प्रकाशित कराई थी। मैं अपने परिवार और खास तौर पर आकाश और सचिन भैया को, मुझे हमेशा सहयोग करने के लिए धन्यवाद देता हूँ और विशेष आभार श्रीमति स्वाति श्रीवास्तव (संस्थापक, Lingua Franca Institute, Allahabad) मैडम और मेरे मामा जी, श्री चन्दुलाल और नीरज़ जी को।

लेखक से संपर्क हेतु :
chaurasiyavik123@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6026-997-5
9 789360 269975